संपादक का नोट

यहोवा की स्तुति करो, सब लोग! इस धन्य महीने में, आइए हम अपने स्वर्गीय पिता, परमेश्वर के प्रति अनंत काल तक आभारी रहें, जिन्होंने हम पापियों से इतना प्रेम किया कि उन्होंने अपने इकलौते पुत्र यीशु को हमारे लिए बलिदान होने के लिए दुनिया में भेजा; और फिर उसे मरे हुओं में से जिलाया ताकि वह हमेशा हमारे साथ रहे, आत्मा में!

आप सभी पाठकों को गुड फ्राइडे और ईस्टर की शुभकामनाएं, आशा और प्रार्थना के साथ कि हमारा पुनर्जीवित यीशु मसीह आज और हमेशा आपके और आपके परिवारों के साथ रहेंगे!

2 तीमुथियुस 4:17 ''परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा और मुझे सामर्थ्य दी, ताकि मेरे द्वारा पूरा पूरा प्रचार हो और सब अन्यजातीय सुन लें। मैं सिंह के मुँह से छुड़ाया गया।'' पौलुस हर लड़ाई में विजयी रहा क्योंकि उसने यीशु पर भरोसा किया और उस पर पूरा विश्वास किया। वह जानता था कि हर प्रकार से विजय केवल यीशु के द्वारा ही मिलेगी! इसी तरह, आज के समय में भी हमें निश्चिंत रहना चाहिए, परिवार और दोस्तों को गवाही देने के लिए; कि, चाहे हम अपने जीवन में कितनी ही बाधाओं का सामना क्यों न करें, यदि हमारे पास यीशु है, तो हम हर लड़ाई का सामना कर सकते हैं, और जीवन में विजयी हो सकते हैं।

स्तिफनुस, परमेश्वर का एक जन, एक बहुत ही नफरत से घिरा हुआ व्यक्ति था – इस हद तक कि लोग उसे पत्थरों से मारने के लिए तैयार थे। परन्तु स्तिफनुस का मन हमेशा केवल परमेश्वर पर केन्द्रित था, और यीशु में उसके विश्वास ने उसे संसार के लोगों के क्रोध का सामना करने का साहस दिया। प्रेरितों के काम 7:55–56 ''परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखकर कहा, "देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूँ।''

डर हम पर कब हावी होता है? जब हम खाली होते हैं, तो सभी प्रकार के भय और गुप्त विचार हमें नष्ट कर देते हैं और हम पर हावी हो जाते हैं। हम कब पराजित महसूस करते हैं? जब परमेश्वर का आत्मा हमारे भीतर नहीं होता है, हम थक जाते हैं, कुछ भी पूरा करने में असमर्थ हो जाते हैं, और जीवन में पराजित महसूस करते हैं। दूसरी ओर, जब हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते हैं, तो हम परमेश्वर के राज्य के लिए कार्य करने के लिए साहस, शक्ति और उत्साह से भर जाते हैं। परमेश्वर जानते है कि यदि उनके बच्चों को इस दुष्ट संसार में जीवित रहना है, तो हमें साहस की आवश्यकता है, जो केवल पवित्र आत्मा से ही प्राप्त की जा सकती है। इसलिए, हमें आज और हमेशा, सच्चाई और साहस में मार्गदर्शन और अगुवाई करने के लिए पवित्र आत्मा की आवश्यकता है।

आज भी परमेश्वर का आत्मा हमारी सभी इच्छाओं को पूरा करने के लिए इस धरती पर चलता–फिरता है। इसलिए, परमेश्वर से बुद्धि और ज्ञान मांगो; क्योंकि पवित्र आत्मा के इन दो आत्मिक उपहारों के बिना, हम अपने विश्वास को बचा नहीं सकते, क्योंकि हम भयभीत होंगे और पराजित महसूस करेंगे, अपने आत्मारिक पथ पर लगातार ठोकर खाएंगे। जैसा कि स्वयं प्रेरित पौलुस ने पवित्र शास्त्र में कहा है, क्योंकि परमेश्वर का आत्मा उस पर ठहरा था, इसलिए वह ठोकर नहीं खाया, परन्तु अपने विश्वास में दृढ़ रहा, और इस प्रकार अपनी दौड़ पूरी की।

इसलिए परमेश्वर के प्यारे बच्चों, अपने विश्वास पर कायम रहो! जैसा कि परमेश्वर का वचन कहता है, इस संसार में परीक्षाएँ और क्लेश होंगे, परन्तु जो विश्वास में अन्त तक धीरज धरे रहेंगे, वे अपनी आत्मिक दौड़ को पूरा करेंगे और परमेश्वर के अनन्त राज्य में प्रवेश करेंगे, जिसे उन्होंने अपने प्रत्येक सन्तान के लिए तैयार किया है। .

जब तक हम दुबारा मिलें तब तक,

पास्टर सरोजा म।

आदम और हव्वा को अदन का वाटिका दिया गया था, रहने के लिए एक फलदायी स्थान दिया था। परमेश्वर ने उन्हें 'ज्ञान के वृक्ष' से खाने से प्रतिबंधित कर दिया। मगर, उन्होंने परमेश्वर के निर्देश की अवहेलना की और सर्प (शैतान) की बात सुनी। अच्छे और बुरे को जानना हमारी जिम्मेदारी नहीं है, यह जानना परमेश्वर का काम है। फिर भी, आदम और हव्वा ने शैतान की बात सुनी और ज्ञान के वृक्ष का फल खाया, जिससे परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन हुआ और उन्हें अपनी नग्नता का पता चला। उन्होंने अपनी नग्नता को पत्तों से ढँक लिया, यह न जानते हुए कि पत्ते भी एक दिन सूख जाएँगे, उन्हें एक बार फिर नग्न होना पड़ेगा। आज भी हम अपनी नग्नता को छिपाने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन अधिक समय तक नहीं। हमें क्रूस पर यीशु के बलिदान को स्वीकार करना चाहिए, और यह जानना चाहिए कि मसीह हमारे लिए मरे। हमें उन्हें अपने जीवन में ग्रहण करना चाहिए, तब वह हमारी नग्नता को ढँक देंगे। हमारे जीवन में कई परीक्षण और क्लेश होंगे, और हमें जीवन में सब कुछ खोना पड़ सकता है, लेकिन खुश रहो, क्योंकि हमारे परमेश्वर ने इस संसार को जीत लिया है। हमारा परमेश्वर न तो सोता है और न ही ऊँघता है, वह हमारे ऊपर देख रहे है, और जब वह फिर लौटकर भेड़ों को बकरियों से अलग करेंगे, तब वह हमारे लिये प्रतिफल लाएंगे।

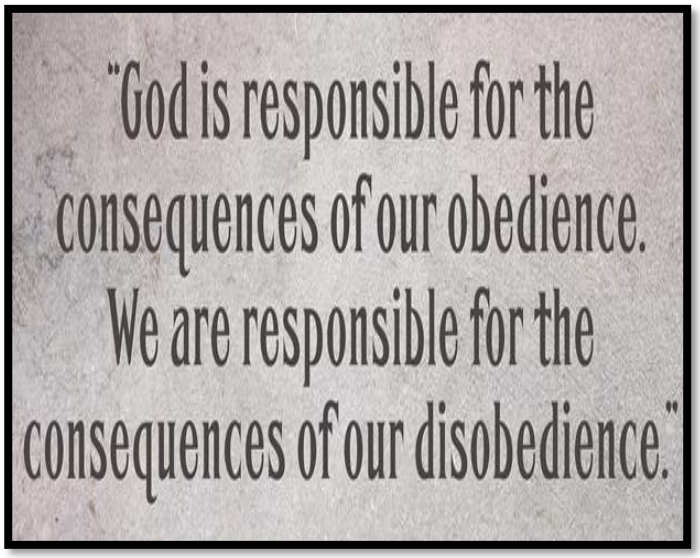

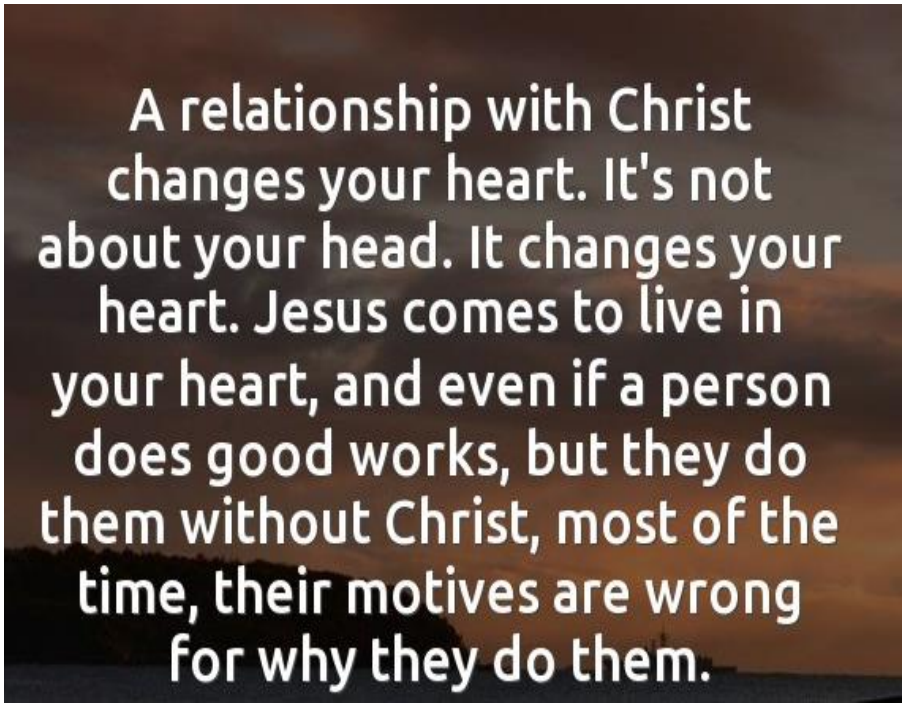

यीशु के शिष्यों ने अपना अभिषेक और आशीष प्राप्त करने से पहले, यरूशलेम में एक जगह का दौरा किया। सामरिया के लोगों ने यीशु पर विश्वास नहीं किया, और इस बात से उनके चेले (यूहन्ना और याकूब) क्रोधित हुए, और उन्होंने यीशु से कहा, *'जिस तरह भविष्यवक्ता एलिय्याह ने स्वर्ग से आग नीचे आने और लोगों को नष्ट करने के लिए प्रार्थना की थी, उसी तरह हम भी ऐसा ही करे?* लेकिन, पिन्तेकुस्त के दिन, जब चेलों ने अपना अभिषेक प्राप्त किया, तो यूहन्ना ने लिखा, *'जो प्रभु से प्रेम नहीं करते, वे उसे नहीं जानते, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।'* यहां हम देखते हैं कि यूहन्ना का हृदय कैसे परिवर्तित हुआ, अभिषेक प्राप्त करने से पहले उन्होंने अलग तरह से बात की और परमेश्वर का अभिषेक प्राप्त करने के बाद, उन्होंने अलग तरह से बात की। 1 यूहन्ना 4:8 ''जो प्रेम नहीं रखता वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।''

इसलिए, परमेश्वर का अभिषेक हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है, और उनके अभिषेक के बिना, हम परमेश्वर के प्रेम को नहीं जान सकते। यहाँ तक कि यीशु के शिष्यों में भी लोगों के लिए परमेश्वर का प्रेम नहीं था उनके अभिषेक प्राप्त करने से पहले ।

केवल प्रेम से ही हम अपने लिए दूसरों के प्रेम को पहचान सकते हैं, हम उनके दुख और दर्द को महसूस कर सकते हैं, और हम उनकी हमारे लिए की गई सेवा को समझ सकते हैं। प्यार के बिना हम यह सब नहीं समझ सकते। जब प्रेम हमारे भीतर नहीं है, तो हम कभी भी परमेश्वर को नहीं जान पाएंगे। केवल परमेश्वर के अभिषेक से ही हम अपने परमेश्वर के प्रेम को जानने के लिए ज्ञान और समझ प्राप्त कर सकते हैं।

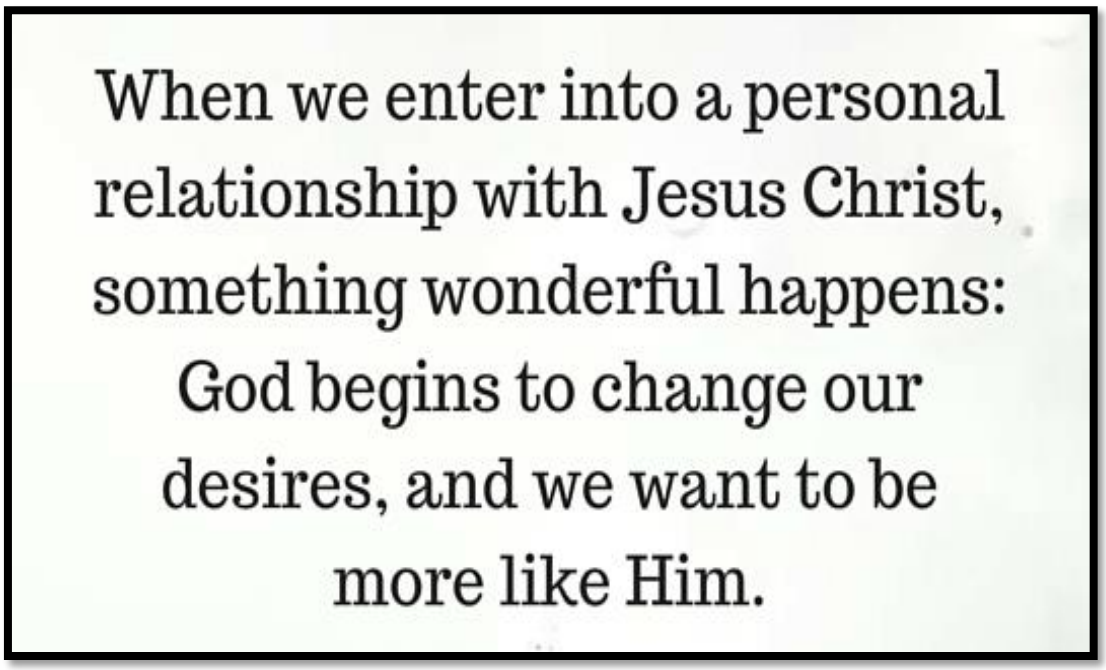

प्रेम धैर्यवान, दयालु और शांतिपूर्ण है। गलातियों की पुस्तक में, हम आत्मा के फलों को जानते हैं: प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम। जब हम परमेश्वर का अभिषेक प्राप्त करते हैं, तभी हम आत्मा के फलों का अनुभव कर सकते हैं। जब हमारे पास परमेश्वर का अभिषेक नहीं है, तो हम उनके प्रेम की गहराई को माप नहीं सकते हैं।

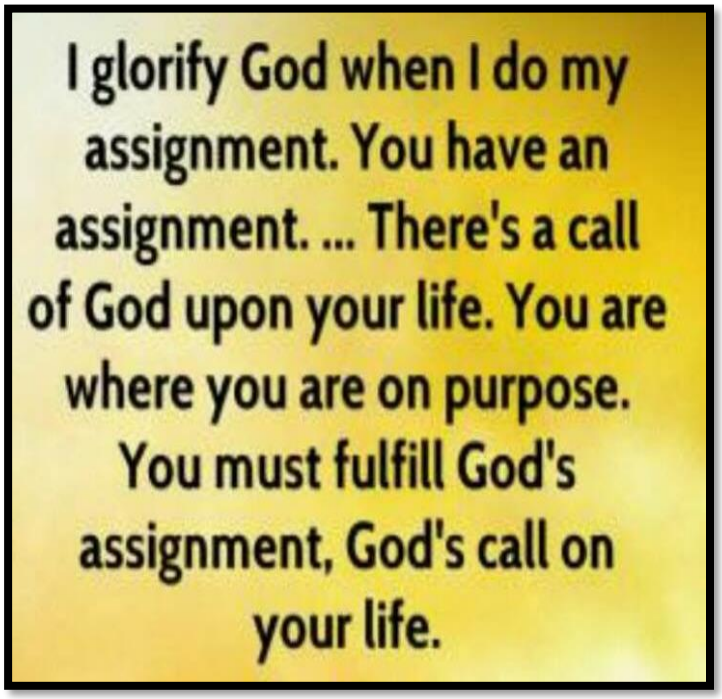

परमेश्वर यूहन्ना 15:16 में कहता है ''तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें नियुक्त किया कि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से माँगो, वह तुम्हें दे।'' हमें प्रभु के लिए फल उत्पन्न करना चाहिए, और फल हमारे भीतर कायम रहना चाहिए, फिर हम जो कुछ भी पिता से यीशु के नाम में मांगेंगे, वह हमें देंगे। निस्संदेह, हमने प्रभु को नहीं चुना, बल्कि उन्होंने हमें चुना है। उन्होंने अपने चेलों को चुना, उन्होंने शाऊल को चुना, फिर उन्होंने दाऊद को चुना... उन्होंने हमें चुना!

जैसे मधुमक्खी मधु के लिए एक फूल से दूसरे फूल पर भटकती है, वैसे ही लोग यीशु मसीह को खोजने आए थे। क्यों? क्योंकि उन्होंने देखा कि यीशु टूटे मनवालों को चंगा करते है और बन्धुओं को छुड़ाता है, उन्होंने लंगड़ों को फिर चलने और अंधों को देखने, गूंगों को बोलने और बहरों को सुनने की शक्ति दी। इसलिए उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए भीड़ उनकी ओर दौड़ती हुई आई। महिलाओं और बच्चों के साथ पाँच हज़ार पुरुषों की भीड़ ने यीशु मसीह के वचन और शिक्षाओं को सुनने के लिए तीन दिन और तीन रात रहे। ऐसा इसलिए था क्योंकि वचन में सामर्थ्य और सच्चाई थी, और वचन जीवन रक्षक था। भीड़ अपनी समस्याओं, अपने परिवारों, अपने दुखों और अपने दर्द को भूल गई, और वे यीशु के सामने बैठे रहे, उनके वचन को ध्यान से सुनते रहे। जैसे मरियम ने सही मार्ग चुना और यीशु के चरणों में बैठ कर वचन को सुना, वैसे ही भीड़ भी यीशु के चरणों में बैठ कर वचन को सुनती थी।

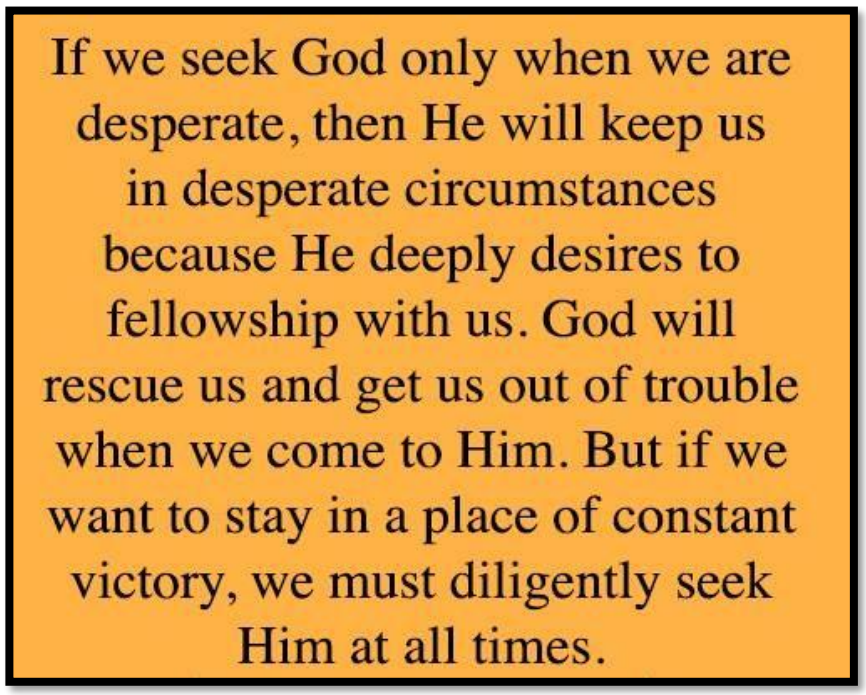

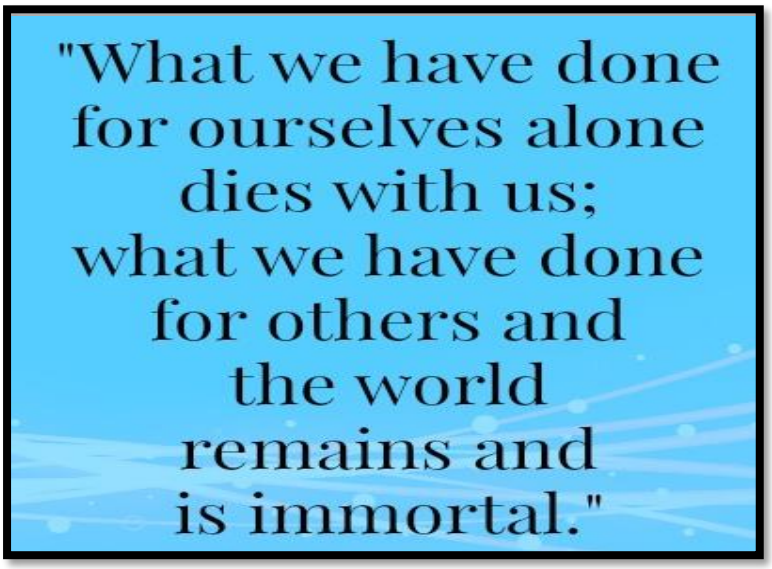

जब उन्होंने वचन समाप्त किया, तो वह जानते थे कि लोग भूखे थे और उन्हें घर के लिए बहुत दूर जाना था। यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा दी कि वे लोगों को बैठा दें। इसके बाद उन्होंने उन्हें चारों ओर देखने के लिए कहा कि क्या कोई भोजन उपलब्ध है। एक छोटे लड़के के पास पाँच रोटी और दो मछलियाँ थीं। उनके चेलों ने यीशु को इस बारे में बताया, और यीशु ने उनसे इसे उनके पास लाने को कहा। यीशु ने स्वर्ग की ओर दृष्टि करके पिता से प्रार्थना की, और रोटी और मछली तोड़ी, और उन्हें 5000 पुरुषों की भीड़ में उनकी स्त्रियों और बच्चों समेत बांट दिया। सबने भरपेट भोजन किया और बचे हुए बारह टोकरियों में एकत्र किए गए।

हमें इस लड़के की तरह होना चाहिए जिसने कोई प्रश्न भी नहीं पूछा। उसने विरोध नहीं किया बल्कि वह सब कुछ दिया जो उसके पास था ताकि यीशु यह चमत्कार कर सके और भीड़ को खिला सके। क्या हमारा विश्वास इस लड़के जैसा है? क्या हमारे भीतर वह प्रेम है जो हमारे पास दूसरों के साथ बांटने के लिए है? नहीं! इसलिए हमने अब तक अपने जीवन में ऐसा आशीष नहीं देखा है। हमारा परमेश्वर एक ही है, उसका वचन प्रेम है, और यह परामर्श और सुधार के साथ आता है। जब हम उनसे प्यार करते हैं, तो वह हमें कभी निराश नहीं करेंगे।

हमारे पाप धुल जाने के बाद, परमेश्वर हमें कौन सी पहली आशीष देते है? वह हमें उद्धार देते है और हमें अपनी पवित्र आत्मा से भर देते है। भजन संहिता 65:9 ''तू भूमि की सुधि लेकर उसको सींचता है, तू उसको बहुत फलदायक करता है; परमेश्वर की नदी जल से भरी रहती है; तू पृथ्वी को तैयार करके मनुष्यों के लिये अन्न को तैयार करता है।''

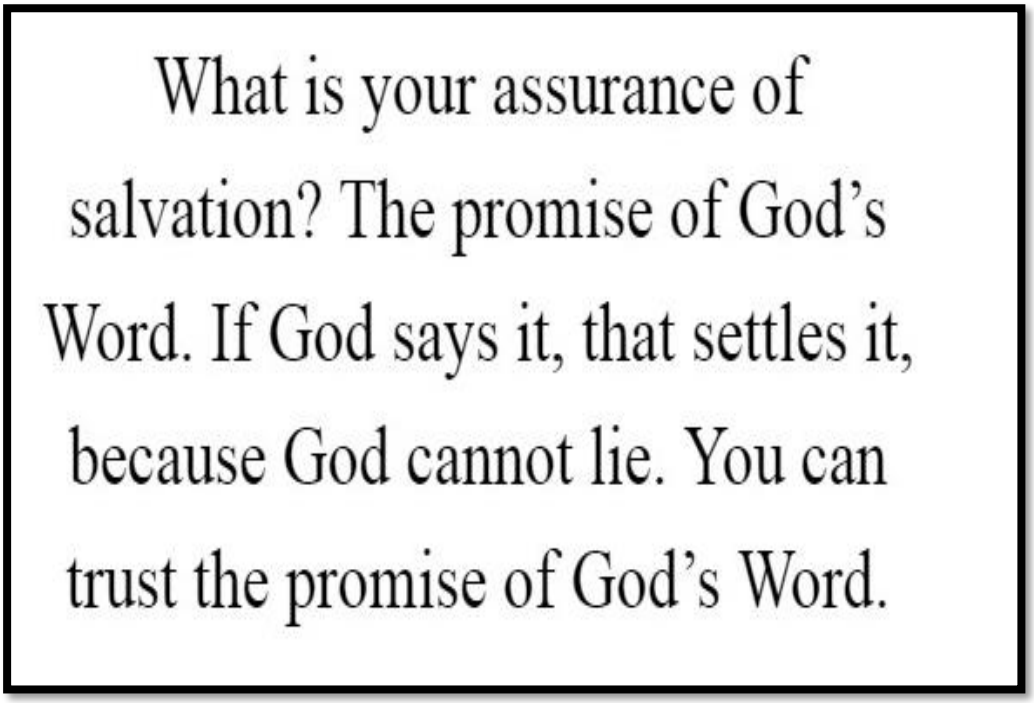

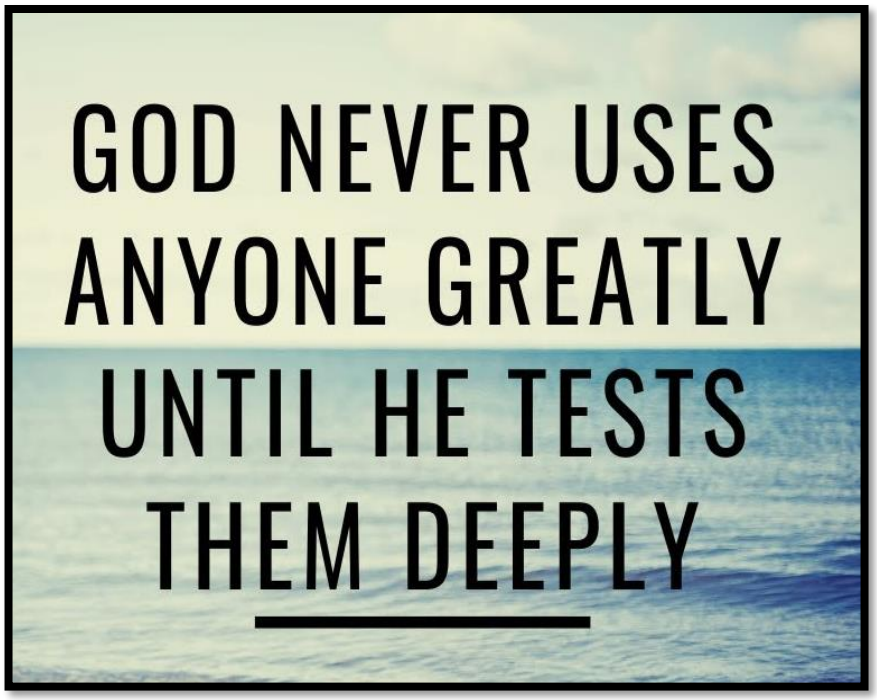

अदन के वाटिका में, एक शुद्ध नदी थी, और जहाँ कहीं उसका पानी बहता था, वह सोना देती थी। अपनी पवित्र आत्मा से हमें आशीषित करके, परमेश्वर ने हम पर अपनी बहुतायत की आशीषें उंडेली हैं। भजन संहिता 66:12 ''तू ने घुड़चढ़ों को हमारे सिरों के ऊपर से चलाया, हम आग और जल से होकर गए; परन्तु तू ने हम को उबार के सुख से भर दिया है।'' हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हमें शुद्धिकरण के लिए भट्टी में डाला जाए, केवल तभी हम परमेश्वर के लिए शुद्ध होकर एक समृद्ध स्थान में आ सकते हैं।

दानिय्येल की पुस्तक में शद्रक, मेशक और अबेदनगो को भट्ठे में डाला गया था। यदि वे भट्ठे में न डाले गए होते, तो वे, साथ ही वे लोग जो उनके आस–पास इकट्ठे थे, कभी भी परमेश्वर के प्रेम को न जान पाते। इसी तरह, यदि दानिय्येल को सिंह की मांद में नहीं डाला गया होता, तो राजा नबूकदनेस्सर कभी भी परमेश्वर के प्रेम को नहीं जान पाता। हमें भी परमेश्वर के प्रेम को जानने के लिए शुद्धिकरण की भट्टी से होकर गुजरना चाहिए। दाऊद यह जानता था, और जब वह राजा बना तब उसने कहा, *'परमेश्वर ने हमें आग और पानी के द्वारा निकालकर एक सुन्दर और धनी स्थान में पहुंचाया।'*

हमें उन इस्राएलियों की तरह नहीं होना चाहिए जो पीने के लिए पानी नहीं होने पर परमेश्वर के विरुद्ध कुड़कुड़ाते थे। इस्राएली मिस्र से बाहर लाए गए, और वे सूखी भूमि पर होकर लाल समुद्र के पार गए। उन्होंने शक्तिशाली और महान चमत्कार देखे, फिर भी लगभग तुरंत, कुछ ही समय में, वे इन महान चमत्कारों को भूल गए और जंगल में पानी की कमी के बारे में कुड़कुड़ाने लगे। पवित्र शास्त्र कहता है कि बहुत से लोग जंगल में ही मर गए।

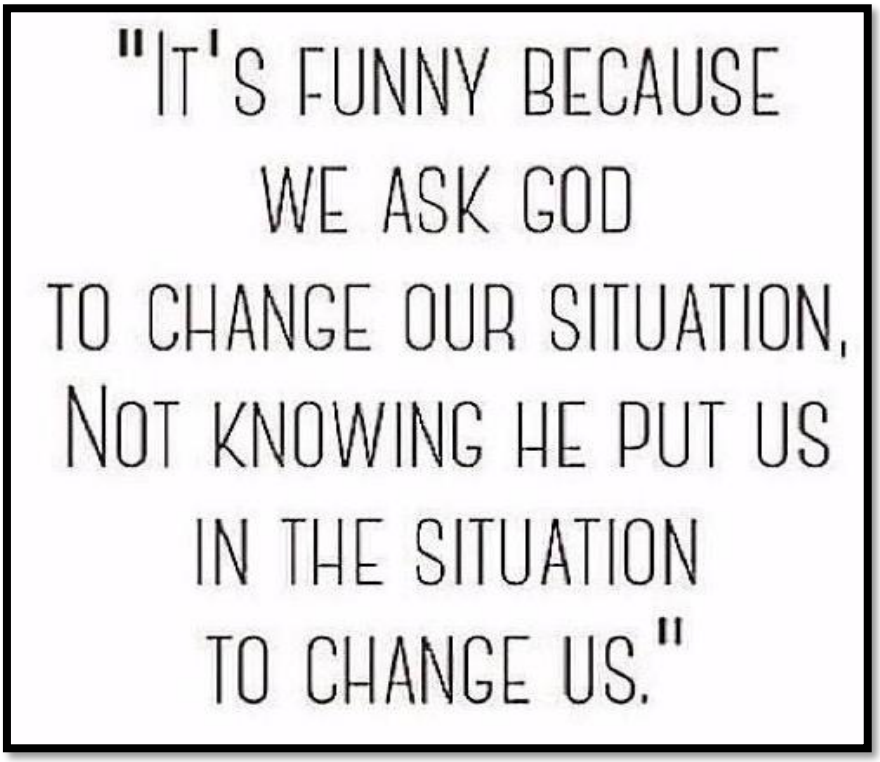

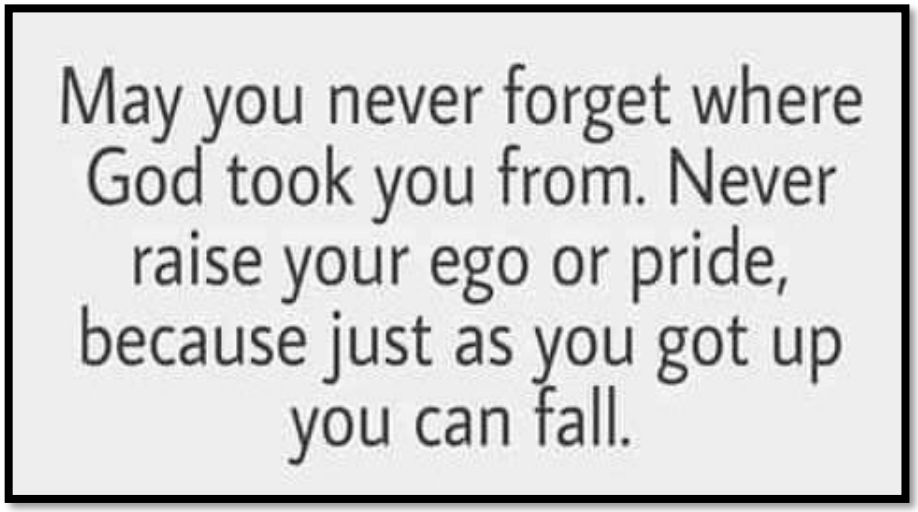

हम हमारे जंगल के मार्ग में नाश न हों, क्योंकि परमेश्वर ने हमारे जीवन में भी बड़े बड़े काम किए हैं; फिर भी, यदि हम परमेश्वर की शक्ति को भूल जाते हैं, तो हम नाश हो जाएंगे। हमेशा याद रखो कि कैसे परमेश्वर इस्राएलियों को मिस्र से बाहर लाए – वह दिन में बादल और रात में आग का खंभा में होकर उनके आगे आगे चला करते थे। जैसे यहोवा निरन्तर इस्राएलियों के संग रहे, वैसे ही वह निरन्तर हमारे संग है, और वह आज हमारे जंगल में हमारे संग होकर फिरते है, जिस से कि हम एक दिन सिय्योन नगर में पहुंच जाएं।

हमें अपने जीवन में परमेश्वर की शक्ति, प्रेम और महान कार्यों को कभी नहीं भूलना चाहिए। कभी भी इस्राएलियों की तरह कुड़कुड़ाना नहीं चाहिए, यहाँ तक कि वे मिस्र की ककड़ी और लहसुन के लिए कुड़कुड़ाते थे और कहते थे कि वे मिस्र वापस जाना चाहते हैं क्योंकि वे उन्हें याद कर रहे थे। इतनी जल्दी वे भूल गए थे कि कैसे उन्हें गुलामों के रूप में परेशान किया जाता था, ईंट बनाने के लिए सूखा भूसा नहीं दिया जाता था, और गुलामी में बेरहमी से पीटा जाता था। कितनी जल्दी वे उन अत्याचारों को भूल गए जिनका उन्होंने मिस्र में सामना किया था। उस समय, उन्होंने रो–रो कर प्रभु से प्रार्थना की थी कि उन्हें दासत्व से छुड़ाया जाए। हमारे दयालु परमेश्वर ने उनकी पुकार और प्रार्थना सुनी और उन्हें गुलामी से छुड़ाने के लिए मूसा को भेजा। जंगल में यहोवा परमेश्वर ने उन्हें स्वर्ग का मन्ना दिया, तौभी उन्होंने मिस्र की ककड़ी और लहसुन को याद किया , और परमेश्वर पर कुड़कुड़ाने लगे। इस कारण उन में से बहुतों को परमेश्वर की ओर से तुरन्त दण्ड मिला, और वे जंगल में ही नाश हुए। हमारे जीवन में, हमें इससे डरना चाहिए, और कभी भी हमारे बंधन के दिनों को प्यार से याद नहीं करना चाहिए, बल्कि हमें आगे देखना चाहिए, कलवारी के क्रूस की ओर और हमारे लिए यीशु के बलिदान को याद रखना चाहिए।

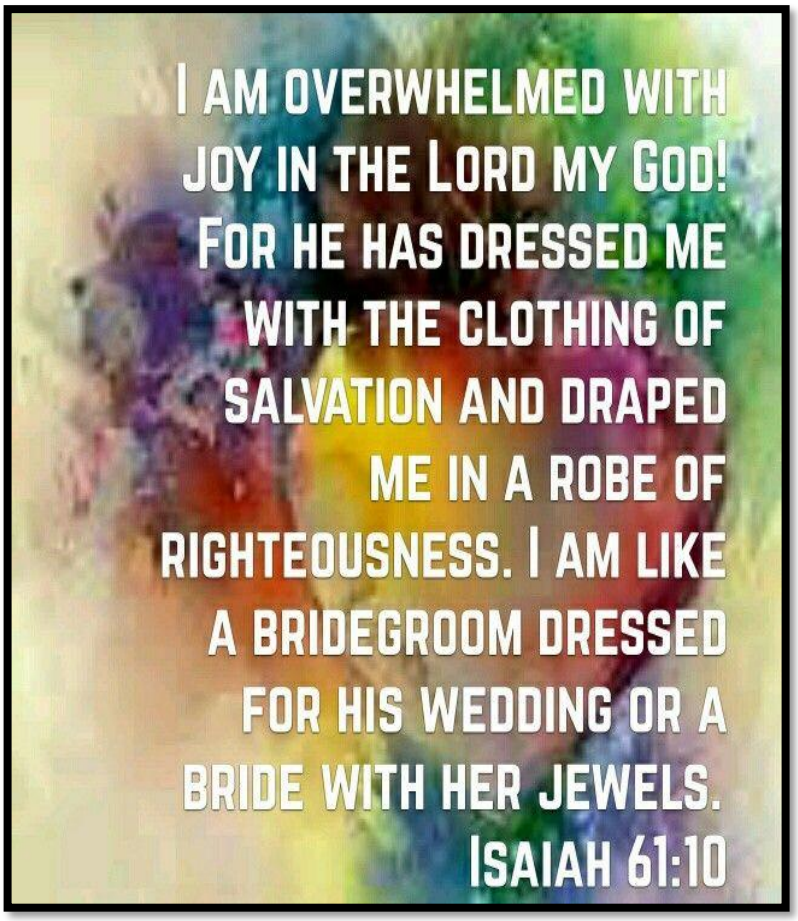

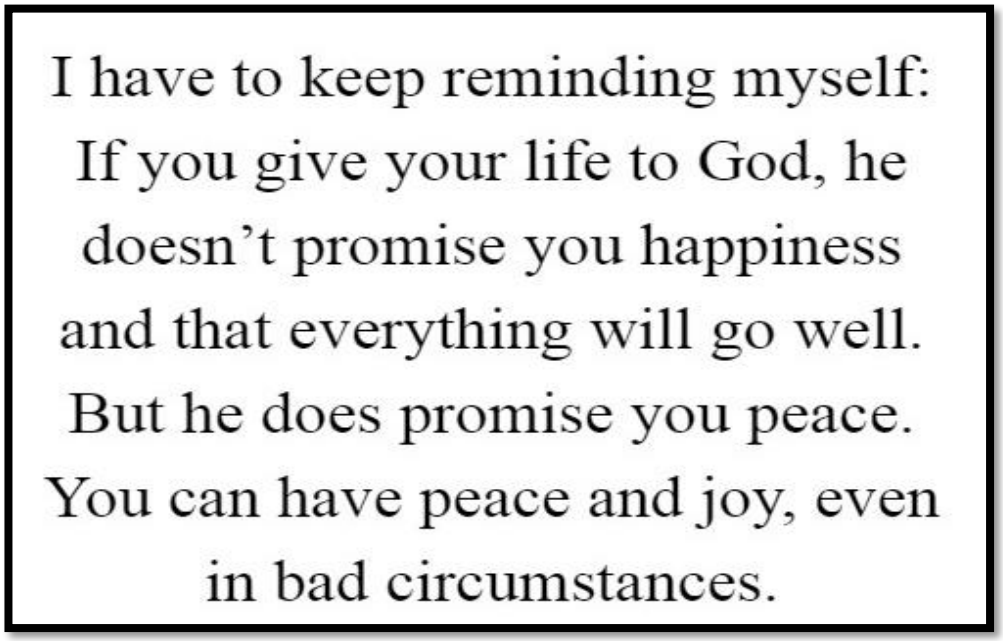

परमेश्वर ने हमारे पापों को धोया हैं और हमें आत्मिक वस्त्र पहनाया हैं। अब, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे कपड़े एक बार फिर से गंदे न हों। हमें हमेशा प्रभु से जुड़े रहने की जरूरत है। यीशु ने कहा, ''संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।'' प्रभु ने हमें गुलाबों के बिस्तर का वादा नहीं किया था, या यह कि हमारे जीवन में कोई दर्द और दुःख नहीं होगा। लेकिन हमें उन पर विश्वास होना चाहिए। परमेश्वर ने हमें अपने जीवन को उनके लिए तैयार करने के लिए कहा है, क्योंकि एक दिन वह हमें अपने साथ अपने स्वर्गीय राज्य में ले जाने के लिए वापस आएंगे।

भजन संहिता 16:6 ''मेरे लिये माप की डोरी मनभावने स्थान में पड़ी, और मेरा भाग मनभावना है।'' दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा रखा, और स्मरण किया, कि परमेश्वर ने उसको मनभावने स्थान में बैठाया है, जिस से उसको अच्छा भाग मिला है। बदले में, दाऊद ने महसूस किया कि उसे प्रभु के लिए अच्छी सेवा करनी है और उसमें एक फलदायी जीवन जीना है। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें अपने बहुमूल्य लहू से धोकर, हमें अपनी आत्मा से भर दिया है, और हमें एक सुखद स्थान में बिठा दिया है। अब हमें उसके लिए अच्छे फल लाने चाहिए। प्रभु चाहता है कि हम, उनके बेटे और बेटियाँ उनके लिए अच्छे फल पैदा करें।

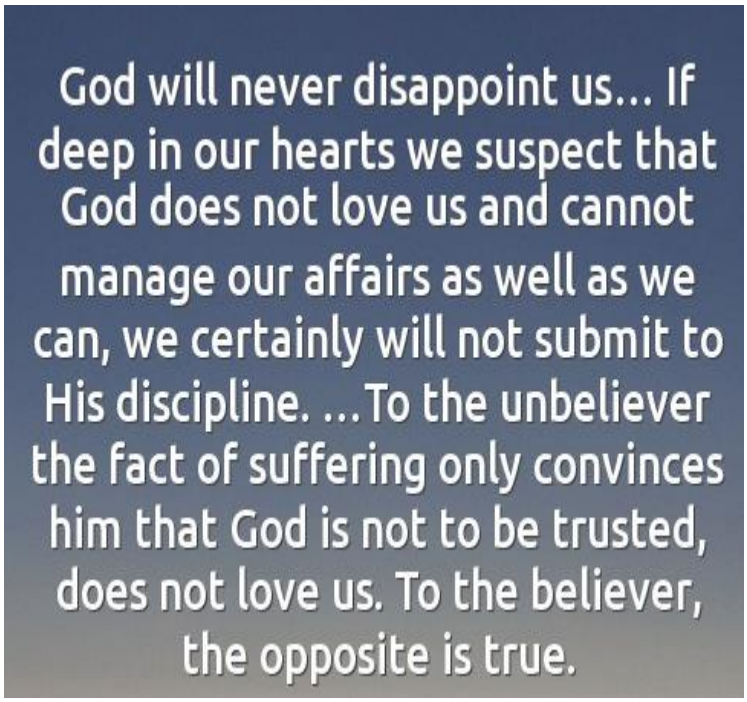

यशायाह 5:2 ''उसने उसकी मिट्टी खोदी और उसके पत्थर बीनकर उसमें उत्तम जाति की एक दाखलता लगाई; उसके बीच में उसने एक गुम्मट बनाया, और दाखरस के लिये एक कुण्ड भी खोदा, तब उसने दाख की आशा की, परन्तु उसमें निकम्मी दाखें ही लगीं।'' यहोवा बहुत दुःख के साथ कहते है, कि किस प्रकार उन्होंने पत्थरों को हटा दिया, पत्थरीली भूमि को साफ किया, और उत्तम उत्तम दाखलता लगाई, जिसके ऊपर उन्होंने सींचा और बाड़ लगाई।

उन्होंने उम्मीद की थी कि फसल अच्छे फल देगी, और उन्होंने यह सुनिश्चित करने का ध्यान रखा कि कोई जंगली जानवर खेत में प्रवेश न करे और उसे न खाए। उन्होंने दिन–रात इस खेत में मेहनत की और फल की प्रतीक्षा की। परन्तु उपज में जंगली फल लगे और यहोवा निराश हुए।

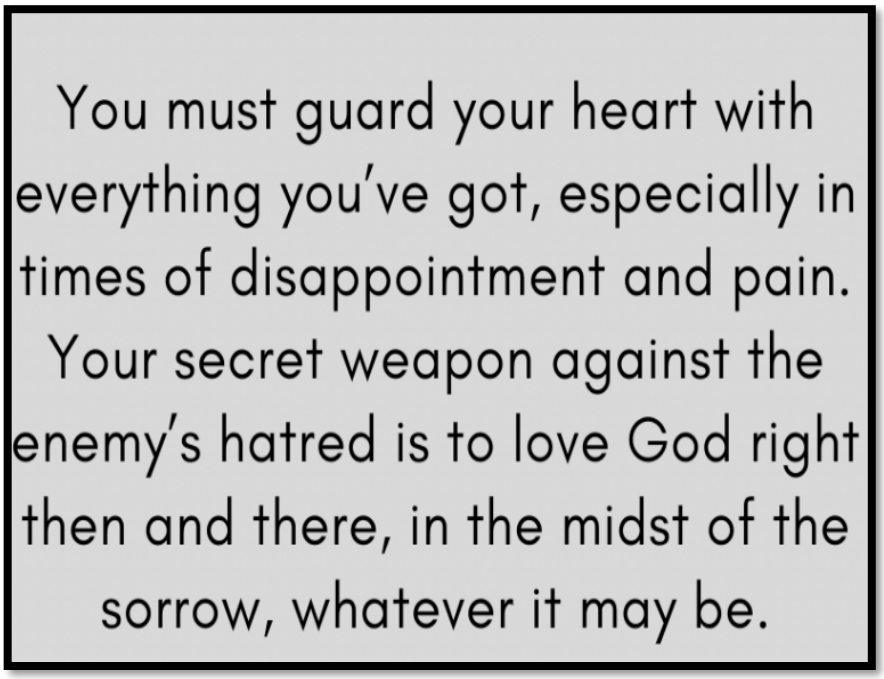

इसी तरह, हमारे परमेश्वर निराश होंगे यदि वे हम में अच्छा फल नहीं पाते हैं, क्योंकि इसका अर्थ होगा कि क्रूस पर उनका कष्ट, बलिदान और अपमान व्यर्थ होगा। परमेश्वर हमारी हर दिल की धड़कन और हमारे हर विचार को जानते है। जब यीशु ने यरूशलेम को देखा तो वह रोए, क्योंकि वह जानते थे कि आने वाले दिन कठिन होंगे।

इफिसियों 4:13 ''जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएँ, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह के पूरे डील–डौल तक न बढ़ जाएँ।'' परमेश्वर ने हमें परमेश्वर के पुत्र के विश्वास और ज्ञान की एकता में रहने के लिए, मसीह की परिपूर्णता में एक सिद्ध मनुष्य बनने के लिए तैयार किया है। परमेश्वर ने बहुत से राजा, भविष्यद्वक्ता और याजक भेजे, परन्तु लोगों ने उनमें से किसी की भी न सुनी। हर बार लोगों ने पाप किया; उनके पाप एक पशुबलि से ढके होंगे।

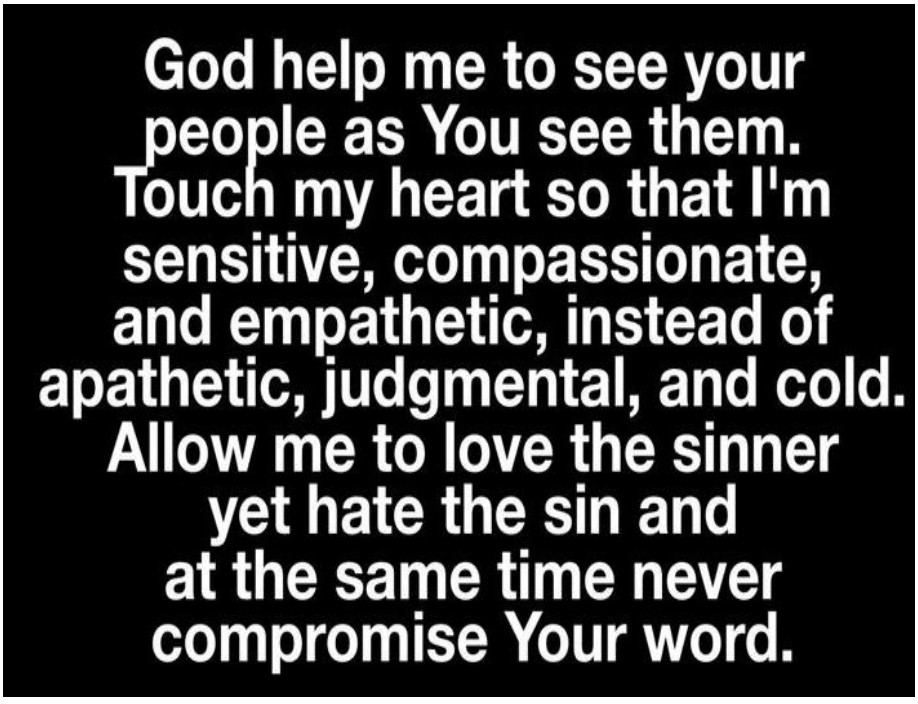

परन्तु उनके पाप पशुबलि से नहीं धुल सकते और न ही शुद्ध हो सकते थे।

इसलिए, यीशु को इस संसार में आना पड़ा, और क्रूस पर उनके बलिदान के द्वारा, और अब उनके बहुमूल्य लहू से शुद्ध किए गए हैं। यीशु चाहते है कि हमारा जीवन उनके लिए फलदायी हो। उन्होंने खेत को साफ किया, उसे जोता, अच्छी लता को लगाया, सींचा, और बाड़ा बान्धा। यदि हम उनके लिए अच्छा फल न लाएँ, तो वह दुखी होंगे।

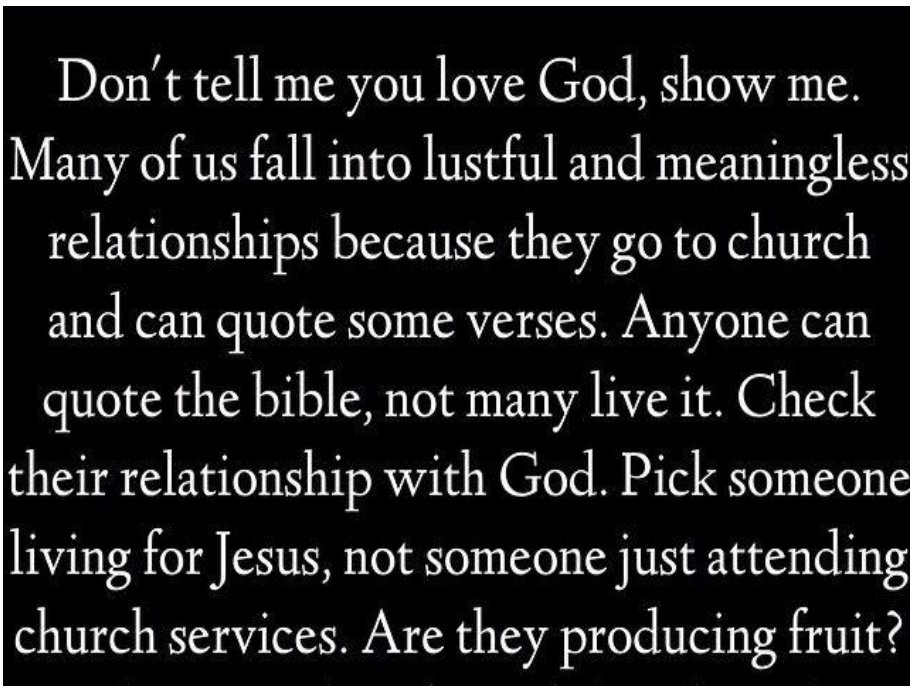

यीशु ने हमारे लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। यूहन्ना 13:35 ''यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।'' प्रभु ने हमसे प्रेम किया है, उन्होंने हमारे लिए अपना जीवन दे दिया है ताकि क्रूस पर उनके बलिदान से सभी मनुष्य उनके शिष्य बन जाएं और एक दूसरे से प्रेम करें। क्या मानव जाति के लिए हमारे मन में ऐसा प्रेम है? यदि परमेश्वर का प्रेम हमारे भीतर है, तो हमारा हृदय पापी और मैल से भरा नहीं हो सकता। जब परमेश्वर का प्रेम हमारे भीतर होगा तब हमारे हृदय में शांति, प्रसन्नता और आनंद होगा।

हमारा प्रभु क्षमा करने वाला परमेश्वर है, जब हम उन्हें स्वीकार करते हैं तो वह तुरंत हमारे पापों को क्षमा कर देते है। लेकिन, क्या हम बदले में दूसरों को माफ करने में सक्षम नहीं हैं, चाहे वे हमसे कितनी भी माफी मांग लें? प्रभु हमारे इस स्वभाव को पसंद नहीं करते हैं, क्योंकि वह चाहते हैं कि हम दूसरों के प्रति भी दयालु हों। हमारा सारा अहंकार और अहम अलग हो जाना चाहिए, तभी हमारा जीवन धन्य होगा। शैतान हमेशा हम पर, हमारे परिवारों पर और अंत में हमारे चर्च पर उंगली उठाता है। जब हमारा क्रोध इस हद तक भड़क जाए, जब हमारी ईर्ष्या उस हद तक पहुंच जाए, तो हमें जान लेना चाहिए कि यह शैतान का काम है। याद रखें, हमारा परमेश्वर चाहते है कि हम एकता और एकात्मकता में रहें, जबकि शैतान हमेशा इस एकता और एकात्मकता को तोड़ना चाहता है।

इफिसियों 5:2 ''और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया, और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया।'' हमारे परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया है कि उन्होंने क्रूस पर हमारे लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया है, वैसे ही हमें भी अपने प्रभु के लिए इस संसार में बहुत सी चीजों का त्याग करने की आवश्यकता है।

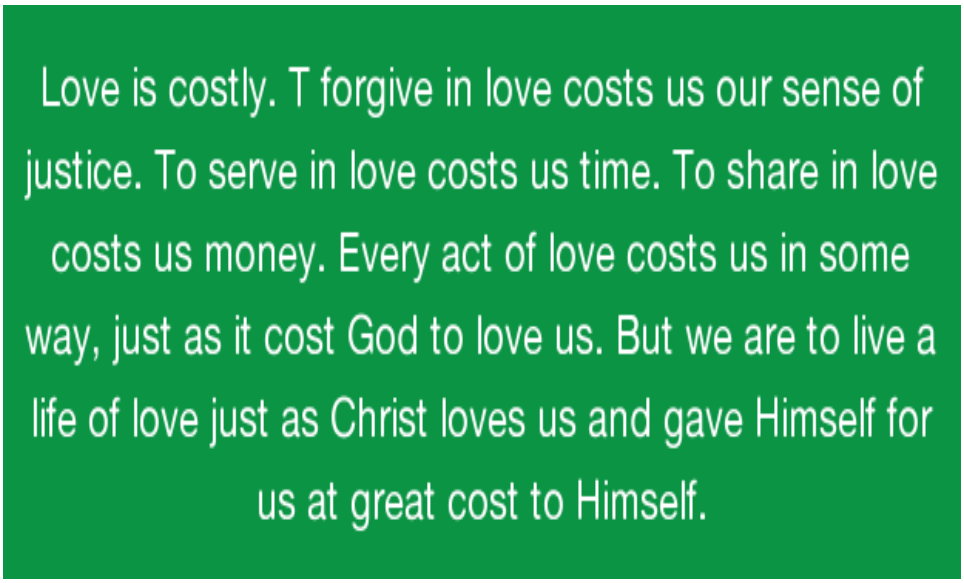

यूहन्ना 14:27 ''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता : तुम्हारा मन व्याकुल न हो और न डरे।'' प्रभु ने अपनी शांति हमारे पास छोड़ी है, ऐसी शांति जो सभी समझ से परे है। प्रभु परमेश्वर हमें खुश रहने के लिए कहते है और डरने के लिए नहीं, शांति से रहने और उन पर विश्वास रखने के लिए कहते हैं, क्योंकि उन्होंने इस दुनिया को जीत लिया है। हमारा परमेश्वर शांति का राजकुमार है, और हमें हमेशा उनकी शांति के लिए प्रयास करते रहना चाहिए। वह अपनी शांति से हमें पूर्ण पुरुष और स्त्री बनाएंगे। यूहन्ना 15:11 ''मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।'' प्रभु परमेश्वर चाहते है कि हम लगातार उनका अनुसरण करें। हमारे सुख और शांति के लिए, परमेश्वर चाहते है कि उनका आनन्द हम में बना रहे और हमारे भीतर उमड़ता रहे। जिस क्षण हमारा ध्यान उनसे हटकर इस संसार की वस्तुओं की ओर हो जाता है, हमारा आनंद गायब हो जाता है और हमारे जीवन में एक बार फिर दुख आ जाता है। एक बार फिर हमारे वस्त्र मैले और मैले हो जाते हैं। हमारा परमेश्वर हमेशा अच्छे फलों की तलाश में रहते है जो हम उनके लिए दे सकें। हमें हमेशा प्रभु के लिए तैयार रहना चाहिए। हमारे भीतर यह परिवर्तन एक दिन में नहीं होता है, हमें लगातार अपने जीवन को परमेश्वर के वचन से सुधारते रहना चाहिए, और तभी हम अपने पापों से धोए और शुद्ध किए जा सकते हैं।

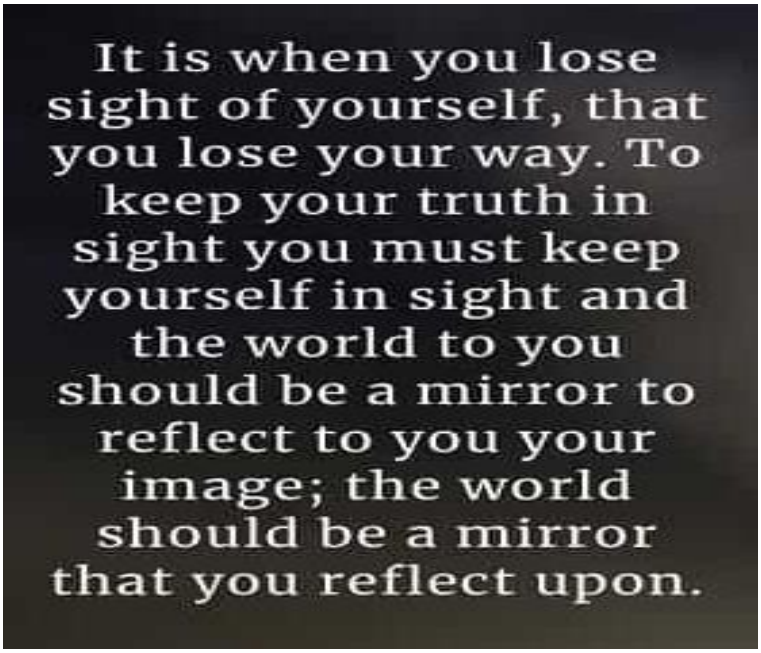

यीशु मसीह ने एक महिमामय जीवन जिया, और बदले में, उन्होंने हमेशा अपने स्वर्गीय पिता की महिमा की। यूहन्ना 17:4 ''जो कार्य तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।'' यीशु ने इस धरती पर हर काम पवित्र आत्मा के अभिषेक से किया। उन्होंने अपने शिष्यों को बार–बार विनम्र होने की सलाह दी, .क्योंकि जब हम विनम्र होंगे, तो परमेश्वर हमें उठाएंगे और संभालेंगे। यीशु ने कभी भी एक बार भी घमंड नहीं किया कि वह स्वर्गीय पिता के पुत्र है, और वह इस पृथ्वी पर लगातार विनम्र बने रहे।

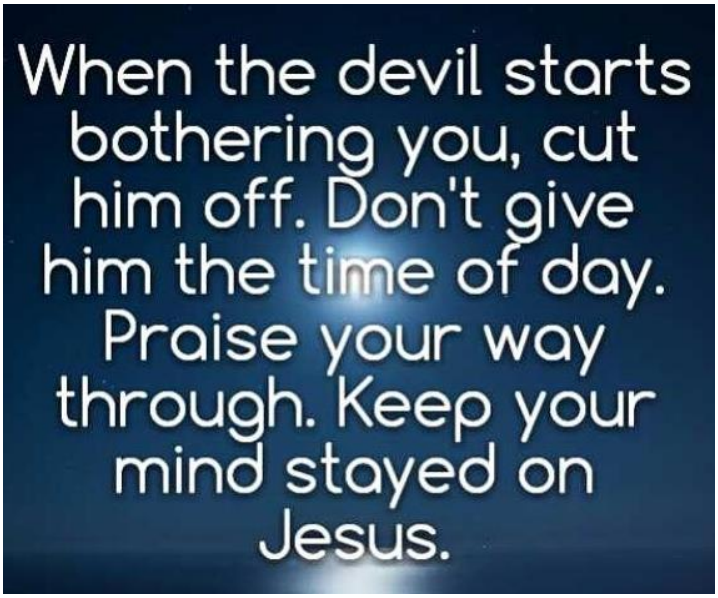

हेरोदेस ने अहंकार से भरकर अपने ऊपर घमण्ड किया, और यहोवा का दण्ड तुरन्त उस पर आ पड़ा। राजा का काम उपदेश देना नहीं, बल्कि लोगों पर शासन करना और उनका मार्गदर्शन करना है। इसके बजाय, राजा हेरोदेस सिंहासन पर बैठा और प्रचार करने लगा।

उसने परमेश्वर की महिमा नहीं की, और इसने परमेश्वर को क्रोधित किया, और परमेश्वर ने अपने दूत को राजा हेरोदेस को मारने की आज्ञा दी। देवदूत ने उसे मारा और वह तुरन्त मर गया, और उसके बाद उसके शरीर को कीड़े खा गए। प्रेरितों के काम 12:21–23 ''ठहराए हुए दिन हेरोदेस राजवस्त्र पहिनकर सिंहासन पर बैठा, और उनको व्याख्यान देने लगा। तब लोग पुकार उठे, "यह तो मनुष्य का नहीं ईश्वर का शब्द है।" उसी क्षण प्रभु के एक स्वर्गदूत ने तुरन्त उसे मारा, क्योंकि उसने परमेश्वर को महिमा न दी; और वह कीड़े पड़के मर गया।''

चाहे छोटी बात हो या बड़ी बात, हमेशा परमेश्वर की महिमा करो। परमेश्वर ने अय्यूब को बहुतायत से आशीष दी। परमेश्वर ने गवाही दी कि उन्होंने इस पृथ्वी पर अय्यूब जैसा दूसरा धर्मी व्यक्ति नहीं देखा। शैतान ने परमेश्वर से कहा कि अय्यूब ने पवित्र सुरक्षा के कारण परमेश्वर की महिमा की और उनकी आराधना की जिसे परमेश्वर ने उसके चारों ओर बाड़ा लगाया था। शैतान ने और यह भी कहा कि अय्यूब को परमेश्वर की उत्तम आशीषों से आशीषित किया गया था, इसलिए वह आराम से था। शैतान ने अय्यूब की परीक्षा लेने के लिए परमेश्वर की अनुमति मांगी, और परमेश्वर ने उससे कहा कि वह आगे बढ़ सकता है, लेकिन अय्यूब की आत्मा को नहीं छू सकता। उसके बाद के क्षणों में, अय्यूब ने अपना सब कुछ खो दिया, जिसमें उसका परिवार, उसकी संपत्ति, उसका घर, उसके पशु आदि शामिल थे।

फिर भी, अय्यूब ने कभी शिकायत नहीं की या परमेश्वर को शाप नहीं दिया, भले ही उसकी पत्नी ने उसे ऐसा करने के लिए कहा। अंत में, जीत अय्यूब की थी। यहोवा ने अय्यूब को आशीष दी और सब कुछ दुगना करके पुनः स्थापित कर दिया। हमारा प्रभु हमेशा हमारे पापों को क्षमा करेंगे, परन्तु हमें यहाँ सावधान रहना चाहिए, क्योंकि पवित्र आत्मा के विरूद्ध किए गए पाप को कभी भी क्षमा नहीं किया जाएगा। आओ हम यहोवा के सामने पवित्र और शुद्ध मन से जीवन बिताएं, और हमारा परमेश्वर जो हमारे मन की इच्छा जानते है, वह निश्चय हम को बहुतायत की आशीष देंगे।

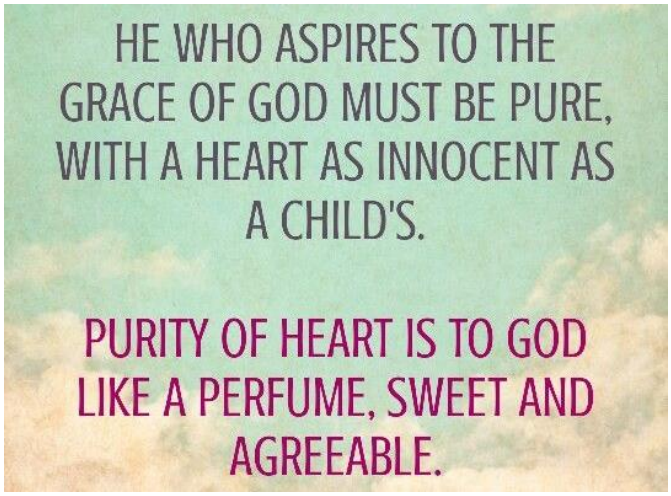

यह संदेश हमारे जीवन में आशीष लाए!

पास्टर सरोजा म।